# इकाई 2 टाल्कॉट पार्सन्सः सामाजिक क्रिया*

**इकाई की रूपरेखा**


2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा

2.2.1 सामाजिक व्यवस्था पर पार्सन्स का दृष्टिकोण

2.3 पार्सन्स का क्रियात्मक दृष्टिकोण

2.4 पार्सन्स का 'सन्दर्भ क्रिया ढांचा'

2.4.1 उन्मुखीकरण एवं परिस्थितियां

2.4.2 मूल्यांकन की भूमिका

2.5 व्यवस्था के रूप में व्यक्तित्व

2.6 क्रिया व्यवस्थाओं के सांस्कृतिक दृष्टिकोण

2.7 सामाजिक व्यवस्था के एकीकृत कार्य

2.8 व्यावहारिक व्यवस्था

2.9 सारांश

2.10 सन्दर्भ

2.11 बोध प्रश्नों के उत्तर


## 2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- सामाजिक क्रियाओं तथा सन्दर्भ क्रिया ढांचे के संबंध में पार्सन्स के दृष्टिकोण पर चर्चा कर पाने में सक्षम होंगे;
- व्यवहार या व्यक्ति की क्रियाओं अथवा समूह पर व्यक्तित्व, संस्कृति एवं सामाजिक व्यवस्था के प्रभाव को स्पष्टता से व्याख्यायित कर सकेंगे।

## 2.1 प्रस्तावना

इस पाठ्यक्रम की पिछली इकाई में हमने रेडक्लिफ ब्राउन के ढांचागत अवधारणा के माध्यम से व्यवस्था के प्रति उनके दृष्टिकोण को जाना। इस इकाई में हम पार्सन्स के लेखों पर विमर्श के जरिये जानेंगे कि वह व्यवस्था को कैसे देखते थे और उनके दृष्टिकोण में सामाजिक व्यवस्था के भीतर व्यक्ति की क्या भूमिका थी। मुख्यतः हम उनकी 'सामाजिक क्रिया अवधारणा' पर ध्यान केंद्रित करेंगे और यह जानेंगे कि पार्सन्स ने किस तरह सामाजिक व्यवस्था को समग्रता से समझने के लिये तर्क प्रस्तुत किये।

*यह इकाई देबव्रत बराल द्वारा लिखित।

## 2.2 सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा

सबसे पहले हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि सामाजिक व्यवस्था का सामान्य अर्थ क्या है। मिशेल (1979:203) ने सामाजिक व्यवस्था को इस तरह परिभाषित किया है– 'सामाजिक व्यवस्था एक सीमित परिस्थिति में विभिन्न कारकों के परस्पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष परस्पर क्रियाओं की बहुलता से मिलकर बनती है। यहां भौतिक अथवा क्षेत्रीय सीमाएं हो सकती हैं, लेकिन सामाजिक सन्दर्भ में यह बिंदु अहम है कि यहां व्यक्ति किसी परस्पर संबद्ध अथवा समान लक्ष्य के प्रति विस्तृत रूप में प्रेरित होते हैं।' इस परिभाषा के अनुसार परिवार, राजनीतिक दलों, नातेदारी समूहों यहां तक कि संपूर्ण समाजों की विविध संबंध व्यवस्थाओं को सामाजिक व्यवस्था कहा जा सकता है। सामाजिक व्यवस्थाओं के संबंध में पार्सन्स के विचार, उनका क्रिया सिद्धांत या क्रिया दृष्टिकोण उनके पूर्ववर्तियों के विचारों पर ही आधारित है। अपनी उल्लेखनीय पुस्तक 'द स्ट्रक्चर ऑफ सोशल एक्शन' (1937) में पार्सन्स ने विभिन्न सामाजिक विज्ञानियों के योगदान की समीक्षा की है, लेकिन यहां उन्होंने परेटो, दुर्खेम और मैक्स वेबर पर अधिक जोर दिया है। अपनी इस पुस्तक में पार्सन्स ने इन विचारकों के योगदान में निहित एकता को उजागर किया है। इस एकता भाव को स्पष्ट करते हुये पार्सन्स ने यह जाना कि सामाजिक व्यवस्था के संबंध में एक सामान्य सिद्धांत की स्थापना के लिये उनके विचार को आगे बढ़ाया जायेगा। उनका विचार था कि उन्होंने जिन कार्यों की समीक्षा की, उनमें क्रिया के सिद्धांत की अवधारणा छिपी या उपस्थित थी। हालांकि, मैक्स वेबर के मामले में उन्होंने क्रिया सिद्धांत को कमोबेश स्पष्ट रूप में पाया। अब हम सामाजिक व्यवस्था की अवधारणा के अध्ययन के संबंध में प्रारंभिक दृष्टिकोणों का परीक्षण करने का प्रयास करेंगे।

पार्सन्स ने प्रारंभिक योगदानों को तीन विस्तृत वैचारिक स्कूलों में विभाजित किया है– उपयोगितावादी, प्रत्यक्षवादी और आदर्शवादी। उपयोगितावादी दृष्टिकोण में सामाजिक क्रियाओं को अत्यधिक व्यक्तिवादी तरीके से देखते हैं। वे उपयोगितावादी तर्कसंगत गणना (व्यक्ति के स्तर पर) पर जोर देते हैं। इस कारण वे इस तथ्य को स्पष्ट कर पाने में अक्षम रहते हैं कि सामाजिक व्यवस्था यादृच्छिक प्रभाव नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से एकजुट है।

दूसरी ओर, प्रत्यक्षवादी मानते हैं कि सामाजिक कारकों को अपनी सामाजिक परिस्थिति का संपूर्ण ज्ञान होता है। यह दृष्टिकोण कारकों के लिये त्रुटि या कारकों के बीच विभिन्नताओं का कोई अवसर नहीं छोड़ता है।

आदर्शवादी मानते हैं कि सामाजिक क्रियाएं सामाजिक भावनाओं और विचारों (जैसे राष्ट्र या व्यक्ति) का परिणाम होती हैं, इस दृष्टि के चलते वे धरातल पर उन दैनिक बाधाओं पर कम ध्यान दे पाते हैं, जो मुक्त विचारों की स्थापना में रोड़े बनने का काम करती हैं। (उपयोगितावाद, प्रत्यक्षवाद और आदर्शवाद की व्याख्या के लिये शब्दावली को भी देखें)

सामाजिक क्रियाओं के ढांचे में पार्सन्स इस वर्गीकरण का उपयोग प्रख्यात विचारक दुर्खेम, परेटो और वेबर के योगदान की समीक्षा में करते हैं। वह अपने लेखन में विभिन्न विचार 'स्कूलों' के तत्वों को विस्तृत रूप से स्पष्ट करते हैं। हालांकि, ऐसा

करते हुये पार्सन्स इन लेखकों के तत्वों में निहित उन अहम तत्वों को भी उभारते हैं जो सामाजिक क्रियाओं की उनकी समझ और उनके सन्दर्भों के क्रिया ढांचे के सिद्धांत की स्थापना में मदद करते हैं।

**बॉक्स 2.1: टाल्कॉट पार्सन्स**

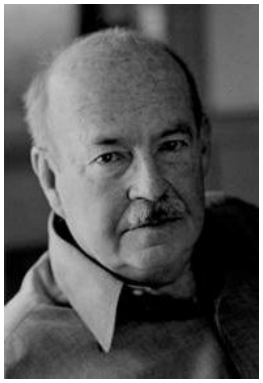

टाल्कॉट पार्सन्स (13 दिसंबर 1902–आठ मई 1979) एक अमेरिकी समाजविज्ञानी थे, जिन्हें सर्वाधिक प्रभावकारी समाजशास्त्रियों में से एक माना जाता है। एमहर्स्ट कॉलेज से स्नातक के बाद वह एक साल के लिये लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में गये, जहां ब्रोनिस्ला मेलिनोस्की के कार्यों पर अध्ययन करते हुये ईवान प्रिचार्ड, मेयर फॉटेज व रेमंड फर्थ के साथ उनकी मित्रता हुयी। लंदन स्कूल ऑफ बिजनेस में ही वह हेलेन बैनक्रॉफ्ट वॉकर से मिले, जिनके साथ 30 अप्रैल 1927 को उनका विवाह हुआ। 1927 में ही उन्होंने हाइडलबर्ग विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र एवं अर्थशास्त्र में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। हाइडलबर्ग में उन्होंने मैक्स वेबर के भाई अल्फ्रेड वेबर के साथ काम किया। मैक्स वेबर का कार्य पार्सन्स के लिये अत्यधिक महत्वपूर्ण बन गया, क्योंकि वह मैक्स वेबर से बहुत अधिक प्रभावित थे। पार्सन्स ने वेबर के लेखों–शोधकार्यों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया। (चित्र साभार विकीपीडिया)

### 2.2.1 सामाजिक व्यवस्था पर पार्सन्स का दृष्टिकोण

पार्सन्स ने इस बात पर जोर दिया कि सामाजिक व्यवस्थाओं के अध्ययन के लिये उपयोगितावादी और आदर्शवादी, दोनों ही तरह के दृष्टिकोण एकतरफा थे। उपयोगितावादी दृष्टिकोण मानता है कि सामाजिक व्यवस्था मनुष्य (व्यक्तियों) की आवश्यकताओं एवं आग्रहों को व्यवस्थित प्रणालियों के रूप में एकीकृत करने के तर्कसंगत प्रयासों का परिणाम है। ये प्रणालियां अनुबंधात्मक पारस्परिकता के जरिये हितों की अनुकूलता पर निर्भर करती हैं। अनुबंधात्मक पारस्परिकता का एक उदाहरण राजव्यवस्था (शासन एवं राज्य) है, जिसमें शक्तियों की प्रणालियों को व्यवस्थित किया गया है। इसी तरह आर्थिक हितों के लिये पारस्परिक अनुबंधात्मकता पर आधारित बाजार प्रणाली भी इसका एक उदाहरण है। लेकिन पार्सन्स के अनुसार उपयोगितावादी समाज विज्ञानियों द्वारा जिस तरह से इन व्यवस्थित प्रणालियों का विश्लेषण किया गया है, उसमें मूल्यों की भूमिका की अनदेखी की गयी है। इसी प्रकार आदर्शवादी दृष्टिकोण में सामान्यतः लोकतंत्र को किसी राष्ट्र की भावना की पूर्ति के रूप में देखा जाता है। आदर्शवाद मूल्यों और विचारों पर जरूरत से अधिक जोर देता है, जबकि सामाजिक व्यवहार और क्रियाओं पर कम। एक तरह से वेबर भी इसी परंपरा से संबद्ध थे, क्योंकि उनका तर्क था कि प्रोटेस्टेंट नैतिकता ने पूंजीवाद को इसके प्रारंभिक चरण में सहायता प्रदान की थी। वेबर और अन्य दृढ़ आदर्शवादियों में अंतर यह था कि वेबर ने कभी यह नहीं कहा कि प्रोटेस्टेंट नैतिकता ही पूंजीवाद का आधार बनी। किन्तु यह बिंदु भी महत्वपूर्ण है कि वेबर ने 'तर्कसंगत तपस्या' और 'आंतरिक सांसारिक तपस्या' जैसे

कुछ मूल्यों के बारे में तो विस्तार से चर्चा की, लेकिन आवश्यकताओं की भूमिका अथवा उपयोगिताओं की खोज की अनदेखी की। पार्सन्स के अनुसार उपयोगितावादी और आदर्शवादी दोनों ही विचार मानवीय आवेगों की कुछ विशेषताओं को पहले से ही धारण करती हैं। आदर्शवादी मानते हैं कि मानव सिर्फ एक भव्य मानसिक योजना की पूर्ति के लिये काम करते हैं, वहीं प्रत्यक्षवादी इस बात पर सर्वाधित जोर देते हैं कि वास्तविक मानवीय क्रियाएं स्थिति की पूर्ण जानकारी से पैदा होती हैं। इस प्रकार उनकी धारणाओं में यह अंतिमता एवं दृढ़ता रहती है कि वहां क्रिया का सही तरीका ही एकमात्र तरीका है। परिणामस्वरूप यहां सामाजिक क्रियाओं में मूल्यों, त्रुटियों, विविधताओं के लिये कोई स्थान नहीं होता। इस प्रकार उपयोगितादी हो या आदर्शवादी या फिर प्रत्यक्षवादी, तीनों ही तरह के विचारों में यह विशिष्टतावाद नजर आता है, जिस पर पार्सन्स आपत्ति जताते हैं। उपयोगितावादी सिर्फ व्यक्ति की तर्कसंगत रुचि पर जोर देते हैं और सामूहिकता के भाव को अनदेखा करते हैं। आदर्शवादी मूल्यों की बात करते हैं, लेकिन अनुभवजन्य वास्तविकता द्वारा मूल्यों पर पड़ने वाले दबावों को नजरअंदाज करते हैं। इसी तरह प्रत्यक्षवादी परिस्थिति के संपूर्ण ज्ञान पर जोर देते हैं और मूल्यों, त्रुटियों व विविधताओं की उपेक्षा करते हैं। इन सब तथ्यों को ध्यान में रखते हुये पार्सन्स ने सामाजिक व्यवस्था के अध्ययन के लिये एक नये दृष्टिकोण को विकसित किया, जिसे क्रियात्मक दृष्टिकोण के नाम से जाना जाता है।

## 2.3 पार्सन्स का क्रियात्मक दृष्टिकोण

टाल्कॉट पार्सन्स द्वारा सहसंपादित पुस्तक 'टुवार्ड्स ए जनरल थ्योरी ऑफ एक्शन' 1951 में प्रकाशित हुयी, जिसने 'संरचनात्मक–क्रियात्मक विचार स्कूल' की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान किया। पार्सन्स क्रियात्मक सिद्धांत प्रतिपादित करना चाहते थे, जो उन परिस्थितियों को स्पष्ट कर सके, जिनके चलते तर्कसंगत कर्ता (व्यक्ति) एक या अन्य क्रिया का चयन करता है। पार्सन्स के क्रियात्मक सिद्धांत की प्रकृति अंतर्विषयी है। यह समाजशास्त्र, मानवविज्ञान, मनोविज्ञान तथा एक सीमा तक जीवविज्ञान से भी अंतर्दृष्टि लेता है और उन परिस्थितियों को सिद्धांत रूप देने का प्रयास करता है, जिनके चारों ओर तर्कसंगत कर्ता कार्य करता है। पार्सन्स चाहते थे कि उनका यह सामाजिक क्रिया सिद्धांत सामाजिक शोधकार्यों में सहायक हो।

मैक्स वेबर और ईमाइल दुर्खेम (आपने इनके बारे में मूल पाठ्यक्रम समाजशास्त्रीय विचारक 1 में पढ़ा है) ने सामाजिक क्रियाओं की अवधारणा प्रस्तुत करने के साथ इनका वर्गीकरण किया। पार्सन्स का सामाजिक क्रिया का सिद्धांत मैक्स वेबर से प्रभावित है, लेकिन ईमाइल दुर्खेम की अवधारणा से अलग नजर आता है (देखें बॉक्स 2)

**बॉक्स 2: मैक्स वेबर, ईमाइल दुर्खेम के सामाजिक किया पर विचार**

'इकोनॉमी एंड सोसायटीः एन आउटलाइन ऑफ इंटरप्रेटिव सोशियोलॉजी' में मैक्स वेबर तर्क देते हैं कि– 'समाजशास्त्र सामाजिक क्रियाओं की व्याख्यात्मक समझ के साथ स्वयं एक विज्ञान है जो अपने कार्यों और परिणामों को भी व्याख्यायित करता है।' (1978:4) उन्होंने सामाजिक क्रियाओं को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया। पहला– तर्कसंगत क्रिया जो किसी लक्ष्य की ओर उन्मुख हो (ज्वैकरेशनल

Zweckrational), दूसरा वह तर्कसंगत क्रिया जो मूल्यों की ओर उन्मुख हो (वर्ट्रेशनल Wertrational), तीसरी तर्कसंगत क्रिया भावनोन्मुख हो सकती है और चौथी क्रिया पारंपरिक प्रकृति की हो सकती है।

दुर्खेम ने 'द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसायटी' (1983) में तर्क दिया कि सामाजिक क्रियाओं का नियंत्रण समाज की सामूहिक चेतना से होता है। उनके अनुसार सामूहिक चेतना सामाजिक नियमों के जरिये संचालित–निर्धारित होती है। ये नियम व्यक्तियों की क्रियाओं को प्रभावित और नियंत्रित करते हैं। यदि कोई क्रिया इन सामूहिक चेतनाओं के अनुरूप नहीं होतीं तो उन्हें विकारी या गलत माना जाता। इससे पूर्व दुर्खेम ने 1897 में आत्महत्या की व्याख्या में क्रिया के मनोवैज्ञानिक अभिविन्यास को चुनौती दी थी। उनका तर्क था कि क्रियाओं की प्रकृति सामाजिक होती है।

पार्सन्स का सामाजिक क्रिया का सिद्धांत व्यक्तियों या समूह की तर्कसंगत क्रियाओं के बारे में बताता है। पार्सन्स का सामाजिक व्यवस्थाओं का दृष्टिकोण एकीकृत प्रकृति का है, क्योंकि उन्होंने न सिर्फ प्रेरक कारकों के महत्व को स्पष्ट किया (जैसे वे कारक जो सामाजिक स्वरूप में उपयोगितावादी दृष्टिकोण में उपस्थित हैं) बल्कि मूल्यों को भी महत्व दिया। वह अपने दृष्टिकोण को सामाजिक क्रिया के सिद्धांत के जरिये लागू करते हैं, जो सामाजिक व्यवस्था का आंतरिक तत्व है। पार्सन्स (1973) के अनुसार क्रिया पृथक नहीं हो सकती है। यह अनुभवजन्य रूप से असतत नहीं, बल्कि व्यवस्था के उन विचारों, भावनाओं, विशिष्टताओं के मूल में अच्छी तरह गुंथा हुआ होता है, जो व्यवस्था को संचालित करते हैं। हम बाद में इन व्यवस्थाओं पर चर्चा करेंगे, पहले हम क्रिया के सिद्धांत को समझने का प्रयास करते हैं।

पार्सन्स के अनुसार क्रिया की अवधारणा सजीव व्यवस्था के रूप में मानव व्यवहार से उत्पादित होती है। सजीव रूप में मनुष्य स्वयं के मस्तिष्क में आने वाले विचारों के साथ–साथ बाहरी वास्तविकताओं से भी संपर्क–संवाद करते हैं। ऐसे में व्यवहार तब क्रिया बन जाता है, जब ये चार परिस्थितियां उपस्थित हों–

- यह लक्ष्यों, कार्य की समाप्ति या अन्य प्रत्याशित परिणामों की प्राप्ति के लिये उन्मुख हो
- यह स्थितियों के अनुरूप हो
- यह सामाजिक नियमों और मूल्यों से निर्धारित–नियंत्रित हो
- यह ऊर्जा, प्रेरणा अथवा प्रयासों पर आधारित हो

जब ये सभी कारक उपस्थित हों, तब व्यवहार ही क्रिया बन जाता है। उदाहरण के लिये– एक महिला मंदिर जाने के लिये एक वाहन से जा रही है। संभवतः वह प्रार्थना करने वहां जा रही है तो इस मामले में उसकी प्रार्थना का समापन उसका वह लक्ष्य या कार्य की समाप्ति है, जिसके लिये वह उन्मुख है। जिस सड़क पर वह सफर कर रही है, वह उसकी स्थिति और जिस कार में वह जा रही है, वह उसका प्रयास है। वहीं, उसका व्यवहार सामाजिक नियमों–मूल्यों से भी निर्धारित होता है, जिसमें प्रार्थना करने को अभीष्ट कार्य माना गया है। इसके अलावा वह वाहन चलाने में अपने कौशल का उपयोग करती है जो उसने समाज से ही सीखा है।

यही नहीं, कार चलाने में ऊर्जा लगती है, जिसमें स्टीयरिंग को थामे रखना, एक्सीलरेटर पर नियंत्रण, सड़कों पर यातायात के बीच कौशलपूर्वक वाहन संचालन शामिल हैं। जब हम इस विश्लेषणात्मक संदर्भ में व्यवहार को देखते हैं, तो उसे क्रिया के तौर पर परिभाषित किया जा सकता है।

इस तरह क्रिया का उन्मुखीकरण दो प्रमुख घटकों में बांटा जा सकता है– प्रेरित उन्मुखीकरण एवं मूल्य उन्मुखीकरणः

- प्रेरित उन्मुखीकरण का अर्थ उस स्थिति से है, जिसमें आवश्यकताओं, बाहरी तत्वों की मौजूदगी या योजनाओं को ध्यान में रखकर कार्य किया जाता है
- मूल्य उन्मुखीकरण का अर्थ मूल्यों, नैतिकता और विचारों के मानकों पर आधारित है।

जैसा कि हम पहले जिक्र कर चुके हैं कि पार्सन्स के अनुसार क्रिया अलगाव में नहीं बल्कि सामूहिक संयोजन में होती है। क्रियाओं के ये सामूहिक संयोजन ही व्यवस्था को संचालित करते हैं। पार्सन्स ने क्रियाओं की इन व्यवस्थाओं को संगठन के तीन तरीकों के रूप में स्पष्ट किया है–

- **व्यक्तित्व व्यवस्थाः** यह व्यवस्था मानवीय व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करती है, जो व्यक्ति की सामाजिक क्रियाओं पर असर डालती हैं
- **सांस्कृतिक व्यवस्थाः** इस व्यवस्था में वास्तविक विश्वास, मूल्यों का मजबूत बुनियादी ढांचा और संचार के कई प्रतीकात्मक साधन अंतर्निहित हैं
- **सामाजिक व्यवस्थाः** इस संदर्भ में सामाजिक व्यवस्था का अर्थ व्यक्तियों और संगठनों के बीच के संवादों के तरीकों और स्वरूपों को स्पष्ट करता है

पार्सन्स के अनुसार सामाजिक व्यवस्था की निम्न विशेषताएं होती हैं–

- यह दो या दो से अधिक कारकों के बीच संवाद–संपर्क स्थापित करती है और संवाद की प्रक्रिया ही इसका मुख्य केंद्रबिंदु होता है
- संवाद किसी परिस्थिति में संपन्न होता है, जो अन्य कारकों या परिवर्तनकर्ताओं से जुड़ी होती हैं। ये परिवर्तनकर्ता भावनाएं तथा मूल्य निर्णय से संबद्ध हैं, जिनके जरिये लक्ष्य या क्रिया के साधन प्राप्त किये जाते हैं
- सामाजिक व्यवस्था में सामूहिक लक्ष्य उन्मुखीकरण या सामूहिक मूल्य उपस्थित होते हैं और प्रामाणिक व संज्ञानात्मक (बौद्धिक) अपेक्षाओं में आम सहमति बनायी जाती है।

सामाजिक व्यवस्थाओं की अवधारणा को और बेहतर समझने के लिये अब हम सामाजिक व्यवस्था संगठन की मूल इकाई को समझने का प्रयास करते हैं।

पार्सन्स के अनुसार किसी व्यक्ति की क्रिया लक्ष्य की ओर उन्मुख होती है, लेकिन क्रिया का चयन अथवा विकल्प सामाजिक नियमों तथा व्यक्ति के मूल्यों से नियंत्रित होता है। इस बिंदु पर पार्सन्स का सामाजिक क्रिया का सिद्धांत अन्य सिद्धांतों से

अलग होता है, जो क्रियाओं के साधन–अंत संबंधों पर जोर देता है। पार्सन्स के अनुसार व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों और मूल्यों के अनुसार नियंत्रित होता है, जिसे उन्होंने 'सन्दर्भों का ढांचा' या फ्रेम ऑफ रेफरेंसेज कहा है। वह तर्क देते हैं कि व्यक्तित्व, संस्कृति और सामाजिकता वे व्यवस्थाएं हैं जो किसी व्यक्ति या सामूहिक क्रिया को नियंत्रित करते हैं। पार्सन्स का क्रिया सिद्धांत व्यक्ति से अधिक महत्व इन व्यवस्थाओं को देता है। आगे हम पार्सन्स के सन्दर्भ क्रिया ढांचे को विस्तार से समझेंगे।

## 2.4 पार्सन्स का सन्दर्भ क्रिया ढांचा

टाल्कॉट पार्सन्स ऐसा क्रिया सिद्धांत प्रतिपादित करना चाहते थे, जो इन सवालों – तर्कसंगत कर्ता कैसे काम करते हैं? व्यक्ति किसी परिस्थिति को किस तरह देखता है? व्यक्ति किसी निश्चित तरीके से ही कार्य क्यों करता है, किसी अन्य तरीके से क्यों नहीं? किसी परिस्थिति में कर्ता को कौन से कारक उन्मुख करते हैं? किसी क्रिया के लिये कौन से तत्व प्रेरक होते हैं? – का जवाब दे सकें। इस तरह पार्सन्स के क्रिया सिद्धांत का सन्दर्भों का ढांचा सामाजिक विज्ञान के सैद्धांतिक एवं शोध अंतर्दृष्टि में योगदान के प्रयास के तौर पर देखा जा सकता है। पार्सन्स के अनुसार व्यक्ति (जिसे वह कर्ता कहते हैं) तार्किक होता है। उसकी क्रियाएं निश्चित लक्ष्य की ओर उन्मुख होती हैं, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान वह सामाजिक नियमों और व्यक्तिगत मूल्यों से प्रभावित रहता है। पार्सन्स इन प्रभावों को क्रियाओं के संदर्भ में ढांचे के तौर पर परिभाषित करते हैं। उन्होंने कुछ ऐसी श्रेणियों को स्पष्ट किया है जो संदर्भों के क्रिया ढांचे में शामिल हो सकती हैं। ये श्रेणियां निम्नवत हैं:

### 2.4.1 उन्मुखीकरण एवं परिस्थितियां

टाल्कॉट पार्सन्स के अनुसार जब कोई कर्ता अपनी क्रिया को उन साधनों से जोड़ता है, जो उसके लक्ष्यों और रुचियों की पूर्ति करती हों तो ऐसी स्थिति में क्रिया इस दिशा में उन्मुखित होती है। यहां पार्सन्स उन प्रक्रियाओं पर जोर देते हैं जो कर्ता द्वारा किसी निश्चित भावना के विश्लेषण को प्रभावित करते हैं और जिनके कारण कर्ता एक निश्चित तरीके से ही क्रिया संपन्न करता है, किसी अन्य तरीके से नहीं। पार्सन्स कहते हैं कि कर्ता का उन्मुखीकरण किसी विशेष क्षण में तात्कालिक परिस्थितियों, मूल्यांकन से प्रभावित होता है। वह बताते हैं कि परिस्थितियां कर्ता के उन्मुखीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कोई परिस्थिति किसी क्रिया को सीमित कर सकती है या विकल्प उपलब्ध करा सकती है। पार्सन्स ने परिस्थितियों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है– गैर सामाजिक और सामाजिक। कर्ता उन्मुखीकरण को प्रभावित करने वाली शिक्षा, व्यवसाय जैसी भौतिक कारकों को गैर सामाजिक श्रेणी में रखा गया है। वहीं, कर्ता के व्यक्तित्व और अन्य कारकों को सामाजिक की श्रेणी में रखा गया है।

### 2.4.2 मूल्यांकन की भूमिका

टाल्कॉट पार्सन्स के अनुसार व्यक्ति या कर्ता का चयन संज्ञानात्मक, मनोभावों और मूल्यांकन विधियों से प्रभावित होता है। संज्ञानात्मक चयन का तात्पर्य यह जानने से है कि किसी विशेष क्रिया को संपन्न करने से लक्ष्य प्राप्ति में कितनी संतुष्टि होगी।

मनोभाव का अर्थ उन्मुखीकरण के उस तरीके से है, जिसमें वस्तुओं के प्रति व्यक्ति सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। मानसिक संबद्धता (कैथेक्सिस) का अर्थ संतोषजनक वस्तुओं–प्रक्रियाओं से व्यक्ति के मानसिक या भावनात्मक जुड़ाव और अप्रिय या हानिकारक वस्तुओं को नकारने से है।

आगे पार्सन्स ने मूल्यांकन की भूमिका पर बहुत जोर दिया है। उनका तर्क है कि कोई कर्ता मानकों के आधार पर मूल्यांकन करता है। ये मानक– सत्यता के संज्ञानात्मक मानक, उपयुक्तता के ग्रहणीय मानक या औचित्य (सही होना) के नैतिक मानक हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में पार्सन्स उन मूल्यों के महत्व के बारे में बताते हैं जो व्यक्ति ने अपने जीवन के विभिन्न चरणों में सीखे होते हैं। पार्सन्स दृढ़तापूर्वक तर्क देते हैं कि क्रिया का उन्मुखीकरण संदर्भगत ही होता है। उनके अनुसार व्यक्ति या कर्ता का व्यवहार अथवा क्रिया सामाजिक ढांचे से प्रभावित होता है। यह किसी निश्चित समय की विशेष परिस्थिति पर निर्भर करता है।

यद्यपि संदर्भों के क्रिया ढांचे की व्याख्या करते हुये पार्सन्स ने बताया कि मनोवैज्ञानिक और सामाजिक–सांस्कृतिक दोनों तरह की श्रेणियों के कारक किसी विशेष क्रिया के चयन, परीक्षण, क्रियान्वयन को प्रभावित करते हैं, फिर भी उन्हें संरचनात्मक–कार्यात्मक समाजशास्त्री के तौर पर देखा गया, क्योंकि उनकी रुचि यह जानने में थी कि– समाज का ढांचा कैसे काम करता है? इस ढांचे के बुनियादी घटक क्या हैं? ये घटक क्या काम करते हैं? और ये प्रणालियां किस तरह व्यक्ति या कर्ता के व्यवहार और क्रियाओं को प्रभावित करती हैं? सन्दर्भों के ढांचे की व्याख्या के बाद पार्सन्स की रुचि यह जानने में जगी कि व्यक्ति या कर्ताओं की बहुलता या प्रतीकात्मक व्यवस्था के स्तर पर यह कैसे काम करता है। इन्हें पार्सन्स व्यक्तित्व, सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवस्था कहते हैं। इन तीन मनोवैाानिक और सामाजिक–सांस्कृतिक प्रणालियों के जरिये पार्सन्स ने व्यावहारिक प्रणाली को भी व्यवस्था के तौर पर पेश किया है। वह कहते हैं कि ये सभी प्रणालियां स्वतंत्र होने के साथ एक–दूसरे से संबद्ध भी हैं। ये सभी एक ढांचे का निर्माण करते हैं जो किसी क्रिया के चयन को नियंत्रित करता है। हम आगे इसके बारे में विस्तार से जानेंगे, लेकिन इससे पहले अपनी प्रगति जांच लेते हैं:

**बोध प्रश्न 1**

1. निम्न वाक्यों को पूर्ण कीजिये:

   अ). पार्सन्स ने बताया कि ..... उन्मुखीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये क्रिया को सीमित कर सकते हैं या विकल्प उपलब्ध करा सकते हैं।

   ब). पार्सन्स के अनुसार ..... और ..... श्रेणियों का उपयोग किसी विशेष क्रिया के चयन, परीक्षण में किया जाता है।

2. पार्सन्स के सन्दर्भों के क्रिया ढांचे के बारे में संक्षेप में बतायें।

   .....

   .....

.....

.....

.....

## 2.5 व्यवस्था के रूप में व्यक्तित्व

व्यक्तित्व व्यवस्था का अर्थ उस प्रणाली से है जो उस प्रेरणा या उन्मुखीकरण को स्पष्ट करती है जो मानवीय व्यवहार को नियंत्रित करता है। व्यक्तित्व प्रणाली में एक व्यक्ति विश्लेषण की इकाई माना जाता है। पार्सन्स की यह जानने में बहुत अधिक रुचि थी कि कोई व्यक्ति किस तरह अपनी क्रियाओं का चयन करता है। पार्सन्स ने अपने अध्ययन के दौरान जैविक क्रियाओं को स्वाभाविक आवश्यकता से अलग करके देखा। वह बताते हैं कि जैविक क्रियाएं स्वतः या पूर्वनिर्धारित होती हैं, जिनमें क्रियाओं के परिणाम की संतुष्टि के लिये चयन या विकल्प संबद्ध नहीं होते। लेकिन स्वाभाविक आवश्यकता वह स्थिति है, जो सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों के चलते विकसित होती है। यहां व्यक्ति की क्रियाएं इन सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों द्वारा उत्पन्न आवश्यकताओं की पूर्ति की ओर उन्मुख होती हैं। पार्सन्स बताते हैं कि इस स्थिति में क्रियाओं का चयन कर्ता की अपेक्षित सामाजिक भूमिका और समाजीकरण से प्रभावित होता है। इस दौरान क्रिया उन साधनों की पुष्टि कर सकती है या चुनौती दे सकती है, जो समाजीकरण या कर्ता की सामाजिक भूमिका के जरिये हासिल की गयी हैं। पार्सन्स पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि कर्ता लक्ष्य की ओर उन्मुख होता है, लेकिन उसकी व्यक्तित्व प्रणाली अन्य उपव्यवस्थाओं से भी संबद्ध होती है। दूसरे शब्दों में व्यक्तित्व प्रणाली अपेक्षाकृत स्वतंत्र है। आगे हम इसके बारे में विस्तार से जानेंगे।

पार्सन्स के अनुसार व्यक्तित्व व्यवस्था का लक्ष्य एक कर्ता की प्रेरणा को समझना है। यह व्यवस्था अपेक्षाकृत स्वतंत्र है, लेकिन समाजीकरण कर्ता के व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पार्सन्स एक उदाहरण से इसे समझाते हैं– कोई बच्चा अपने वयस्कों की प्रतिक्रियाओं के तरीकों से सीखता है, ये प्रतिक्रियाएं आगे चलकर बच्चे की अपनी रुचियों या चयन के तरीकों को प्रभावित करती हैं। बच्चा प्रतिक्रियाओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करता है और इस तरह उपयुक्त दृष्टिकोण सीखता है। यहां बच्चा अपने भीतर जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि से अलग सामाजिक संबद्धता भी विकसित करता है। बच्चा अपने बड़ों की इच्छाओं की पूर्ति की ओर उन्मुख होता है, इसे समाजीकरण कहा जाता है। समाजीकरण लोगों की क्रियाओं के निर्धारण, निर्देशन और नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। लेकिन चयन को प्रभावित करने के सहज ज्ञान के महत्व को भी नकारा नहीं जा सकता है। यहां पार्सन्स ने 'व्यावहारिक मनोविज्ञान' विषय से सहज ज्ञान की श्रेणी को अपने अध्ययन में शामिल किया है। वह बताते हैं कि सहज ज्ञान व्यक्तित्व में अंतर्निहित विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ संपर्क और समायोजन में अहम भूमिका निभाता है। इस तरह व्यक्तित्व व्यवस्था जहां स्वतंत्र है, वहीं यह अन्य नियमों से भी समन्वय करती है।

आगे पार्सन्स बताते हैं कि व्यवस्था के तौर पर व्यक्तित्व की स्थापना चार कारकों से की जाती है। सबसे पहला है व्यावहारिक मनोविज्ञान (इसकी व्याख्या इकाई के

अगले हिस्से में की गयी है), दूसरा अनुकूलन जिसके जरिये व्यक्ति संतुष्टि (आवश्यकताओं की पूर्ति) या लक्ष्यों की प्राप्ति के रास्ते तलाशना सीखता है। इस प्रकार संघर्ष और चिंताओं की आशंकाएं कम हो जाती हैं। लेकिन जब यह व्यवस्था नाकाम रहती है, तब व्यक्तित्व की सुरक्षा और समायोजन के कारक उभरकर आते हैं। तीसरा– सुरक्षा और समायोजन के जरिये व्यक्तित्व में स्वाभाविक आवश्यकता के रास्ते एकीकृत हो जाते हैं। चौथा– विभिन्न उपप्रणालियां व्यक्तित्व में अंतर्निहित होती हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व को एक चलायमान स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में देखा जाता है।

पार्सन्स ने तर्क दिया कि हर कर्ता के अपने लक्ष्य और तरीके होते हैं, लेकिन जब ये लक्ष्य और तरीके नियमों के जरिये अनुकूलित किये जाते हैं, तब इन्हें स्वाभाविक आवश्यकता कहा जाता है। वह उदाहरण देकर बताते हैं कि सामाजिक व्यवस्था में दो या दो से अधिक कर्ता अपनी–अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। वह आगे दो कर्ताओं (जिन्हें ईगो और अल्टर कहा गया है) का उदाहरण देते हैं। उनके अनुसार ईगो से की गयी अपेक्षा और उसके द्वारा अपनी भूमिका के निर्वहन में किये जाने वाले प्रयास अल्टर के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। किन्तु इसी दौरान ईगो अल्टर की अपेक्षित भूमिका को नकारने का विकल्प चुन सकता है। वह या तो विद्रोही बन सकता है या परिस्थिति से स्वयं को बाहर करने का निर्णय ले सकता है। इस सन्दर्भ में पार्सन्स तर्क देते हैं कि व्यक्तित्व स्वायत्त है, क्योंकि यह संवाद करता है, संशोधन करता है और अपेक्षित भूमिकाओं के अनुरूप ढलने का प्रयास करता है।

व्यक्तित्व प्रणाली के विश्लेषण के जरिये पार्सन्स बताते हैं कि भौतिक क्रियाओं से स्वाभाविक आवश्यकताओं तक मानकों–मापदंडों का क्रमिक परिवर्तन और आंतरिकीकरण होता है। दूसरे शब्दों में कर्ता की क्रियाएं और संस्कृति दोनों ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रभावित और नियंत्रित करती हैं। लेकिन पार्सन्स क्रियाओं पर जैविक गतिविधियों के नियंत्रण के सिद्धांत के विरोधी थे। वह मानते थे कि गतिविधियां सामाजिक रूप से विकसित होती हैं। उनका यह दृष्टिकोण सांस्कृतिक व्यवस्था को और स्पष्ट करता है।

## 2.6 क्रिया व्यवस्था के सांस्कृतिक दृष्टिकोण

पार्सन्स ने मानवविज्ञान से सांस्कृतिक उन्मुखीकरण के दृष्टिकोण को लिया। सांस्कृतिक व्यवस्था व्यक्ति और विशेष सांस्कृतिक व्यवस्था के बीच संपर्क–समायोजन पर जोर देती है। पार्सन्स ने बच्चे के पालन–पोषण का उदाहरण देते हुये इसे स्पष्ट किया है। वह बताते हैं कि समाजीकरण की प्रक्रिया के जरिये बच्चा अपने बड़ों से सीखता है। यहां पार्सन्स सामाजिक व्यवस्था के स्थायित्व में सांस्कृतिक प्रणाली की भूमिका पर जोर देते हैं। यहां स्थायी सांस्कृतिक प्रणालियां वे प्रणालियां हैं जो सर्वसामान्य और साझी हैं। पार्सन्स ने सांस्कृतिक व्यवस्था को तीन घटकों में बांटकर देखा है। पहला– विचार और विश्वास। दूसरा– भावपूर्ण प्रतीक जैसे कला और शैलियां। तीसरा मूल्योन्मुखी व्यवस्था। पार्सन्स कहते हैं कि प्रत्येक सांस्कृतिक प्रणाली विभिन्न उन्मुखीकरण समस्याओं के समाधान में सहायक होती है। उदाहरण के लिये विचारात्मक प्रणाली संज्ञानात्मक समस्याओं का हल देती हैं। भावपूर्ण प्रतीकों के जरिये यह सीखा जा सकता है कि अपने विचारों या

भावों को किस तरह उपयक्त तरीके से प्रदर्शित किया जा सकता है। वहीं मूल्योन्मुखी प्रणाली मुख्यतः मूल्यांकन की प्रक्रिया में काम आती है, लेकिन सामाजिक एकीकरण में इसकी विशिष्ट भूमिका नहीं होती (21)। मूल्योन्मुखीकरण पारस्परिकता एवं दायित्वों की पूर्ति में मदद करता है, जो आगे चलकर भूमिका की अपेक्षाओं और अनुमोदन की पूर्ति करते हैं। दूसरे शब्दों में सांस्कृतिक प्रणाली एक निश्चित तौर–तरीके को बनाये रखने में मददगार है और सामाजिक अनुक्रम को स्थायी व सुरक्षित रखता है।

पार्सन्स सांस्कृतिक व्यवस्था को सांस्कृतिक सांचा (पैटर्न) कहते हैं। ये सांचे आसानी से समझे जा सकते हैं। वह बताते हैं कि व्यक्ति इन्हें या तो स्वीकृत करता है या अस्वीकृत। अकसर व्यक्ति इन सांचों को अंतर्निहित कर लेता है। जब ये सांचे आंतरिकीकृत हो जाते हैं तो ये व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा बन जाते हैं। पार्सन्स ने उन मूल्योन्मुखीकरणों पर जोर दिया है जो आंतरिकीकृत हो चुके हैं। यहां पार्सन्स बताते हैं कि सभी क्रिया व्यवस्थाएं स्वतंत्र होने के साथ परस्पर निर्भर भी हैं।

सांस्कृतिक व्यवस्था पर चर्चा करते हुये पार्सन्स सूक्ष्म या व्यक्तिगत दृष्टिकोण से अलग जाते हैं और वृहद दृष्टिकोण या ढांचागत तत्वों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। पार्सन्स सामाजिक व्यवस्था पर अपने परिणामों के जरिये सामाजिक तत्वों की व्याखया करते हैं। सामाजिक व्यवस्था के विश्लेषण पर आगे बढ़ने से पहले आइये अपनी प्रगति की जांच करें:

**बोध प्रश्न 2**

1. पार्सन्स के अनुसार व्यक्तित्व किस तरह अपेक्षाकृत स्वायत्त है?

   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

2. पार्सन्स के अनुसार समाजीकरण किस तरह व्यक्ति की क्रियाओं को प्रभावित करने में अहम भूमिका निभाता है?

   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

3. सांस्कृतिक व्यवस्था के तीन घटक कौन से हैं?

   .....
   .....
   .....
   .....
   .....

## 2.7 सामाजिक व्यवस्था के एकीकृत कार्य

जब किसी साझी संस्कृति के प्रभाव के बिना विभिन्न कर्ता किसी विशेष परिस्थिति में एक दूसरे से संपर्क–संवाद करते हैं तो इसे सामाजिक व्यवस्था कहा जाता है। पार्सन्स के अनुसार समाज एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है, जिसकी अपनी स्व–सहअस्तित्व व्यवस्थाएं हैं। सामाजिक ढांचे की सबसे महत्वपूर्ण इकाई व्यक्ति नहीं, बल्कि भूमिका है। भूमिका किसी संवाद प्रक्रिया के दौरान सीमा को परिभाषित करती है और व्यक्ति जिनसे संवाद करता है, उनसे पूरक अपेक्षाओं को भी स्पष्ट करती है। यह व्यवस्था दो या अधिक लोगों के बीच भूमिका संवाद पर केंद्रित होती है। भूमिकाएं तब संस्थानीकृत होती हैं, जब वे सांस्कृतिक सांचों से संबद्ध या समान होती हैं और समाज के सदस्यों के साझा नियमों की पुष्टि करती हैं। हालांकि भूमिका अपेक्षाएं और प्रतिबंध व्यक्तित्व में बाधा बन सकती हैं, लेकिन व्यक्ति इन नियमों से एक निश्चित सीमा तक खुद को अलग कर सकता है। यह स्वतंत्रता व्यवस्था को बाधित किये बिना विभिन्न व्यक्तित्वों को समायोजित करने के अवसर प्रदान करती है। व्यवस्था में भूमिका अपेक्षा निहित है, इस तरह यहां साझी वास्तविकता देखी जाती है।

पार्सन्स बताते हैं कि अलग–अलग व्यक्तियों के अलग–अलग मूल्योन्मुख हो सकते हैं, जबकि सामाजिक व्यवस्था का एक साझा सांस्कृतिक लक्ष्य हो सकता है। यह साझा संस्कृति एकीकरण और आवंटन की समस्या का समाधान तलाशती है। पार्सन्स के अनुसार अस्तित्व के लिये सामाजिक व्यवस्था को कुछ निश्चित प्रक्रियाओं को संपन्न करना होता है। इस तरह भूमिकाओं का एक ऐसा सेट बन जाता है जो एक–दूसरे के साथ समन्वय और संपूरक के तौर पर काम करते हैं। ये भूमिकाएं अपरिहार्य हैं, लेकिन चूंकि व्यक्ति का जीवनकाल सीमित है, यहां व्यवस्था को ऐसे व्यक्तियों की जरूरत होती है जो प्रतिस्थापित होते रहें, ताकि भूमिकाओं का सातत्य और व्यवस्था की निरंतरता बनी रहे। ऐसे में पुष्टि या विचलन के लिये भूमिकाओं और प्रतिबंधों को परिभाषित करने की आवश्यकता महसूस होती है। लेकिन ऐसा नहीं है कि कोई भी व्यक्ति कुछ भी भूमिका निर्वाह कर सके, बल्कि व्यक्तियों का चयन मूल्यांकन के मानकों के अनुरूप किया जाता है। इस तरह इस व्यवस्था के सामाजिक ढांचे का स्थायित्व मूल्यों के संस्थानीकरण पर निर्भर करता है। ये मूल्य चयन को वैधानिक आधार देने के साथ प्रतिबंधों को गति देते हैं। यह व्यवस्था परस्पर संवाद करने वालों को भूमिकाओं के आवंटन के जरिये एकीकरण के लक्ष्य की पूर्ति करती हैं। इसके अलावा व्यवस्था इन एकीकृत भूमिकाओं को पर्याप्त शक्ति और प्रतिष्ठा भी प्रदान करती है। यह भूमिकाएं निभाने वाले व्यक्तियों को समाज की आम मूल्य सहमति की पुष्टि करनी चाहिये। इस तरह ये आवंटित और एकीकृत भूमिकाएं समाज के लिये एकीकरण कार्यों को पूर्ण करती हैं।

पार्सन्स के लिये सामाजिक व्यवस्था का विश्लेषण उस तंत्र को स्पष्ट करने से है जो सामाजिक संवादों को नियंत्रित करता है और यह जानना है कि क्यों व्यक्तियों के बीच निश्चित प्रकार का संबंध होता है। इन तीन प्रणालियों के अलावा पार्सन्स ने व्यावहारिक व्यवस्था की भी अवधारणा दी है।

## 2.8 व्यावहारिक व्यवस्था

यह सिद्धांत उन आधारभूतों में से एक नहीं है, जिनके इर्द–गिर्द पार्सन्स ने क्रिया व्यवस्था को सिद्धांतरूप दिया है, लेकिन इस व्यवस्था के जरिये पार्सन्स ने व्यक्तित्व और इसके जैविक आधार के बीच के अंतर को पाटने का प्रयास किया है। पार्सन्स के अनुसार व्यावहारिक प्रणाली का कार्य अनुकूलन है। यहां व्यक्ति अपने मूल्यों और उद्देश्यों के जरिये अपने पर्यावरण को परिभाषित करता है। व्यवहार सिद्धांत के अनुसार सहज ज्ञान व्यक्ति के चयन और रुचियों को प्रभावित करता है, लेकिन इस विचार को समाजशास्त्र एवं सामाजिक मानवविज्ञान ने चुनौती दी है, क्योंकि यह सीखने के महत्व को समझाने में नाकाम रहा है।

पार्सन्स ने व्यावहारिक मनोविज्ञान के निश्चित बुनियादी तत्वों को स्पष्ट किया और बताया कि किस तरह ये प्रभावित होते हैं। पार्सन्स बताते हैं कि सबसे पहले मनोवैज्ञानिक जरूरतें आती हैं, उदाहरण के लिये– नींद की आवश्यकता, भोजन की आवश्यकता, सांस लेने की आवश्यकता आदि, लेकिन सामाजिक संबंध में रहने की आवश्यकता सामाजिक–सांस्कृतिक जरूरत से कहीं अधिक है। यहां पार्सन्स बताते हैं कि इस प्रक्रिया के दौरान सहज ज्ञान स्वाभाविक आवश्यकता की ओर बदल जाता है। दूसरे शब्दों में जैविक आवश्यकताओं की पूर्ति की प्रक्रिया सामाजिक–सांस्कृतिक उन्मुखी हो जाती हैं। दूसरा, प्रेरणा की उत्पत्ति संज्ञानात्मक एवं मनोभावों के उन्मुखीकरण से होती है। जब ये विकल्प और चयन व्यवस्थित हो जाते हैं तो ये उन्मुखी व्यवस्था बनाते हैं। तीसरा, मूल्यांकन का अर्थ विकल्पों की एक विस्तृत विविधताओं से चयन की प्रक्रिया से है। यहां क्रिया किसी उद्देश्य की पूर्ति को उन्मुख भी हो सकती है अथवा नहीं भी। चौथा, सीखने का अर्थ सिर्फ सूचनाओं के एकत्रीकरण से नहीं है, बल्कि इसका तात्पर्य उन्मुखीकरण के नये तरीकों को लागू करने से है।

इस तरह अब तक हम पार्सन्स के क्रिया सिद्धांत और इन क्रियाओं को नियंत्रित करने वाली व्यवस्था को रेखांकित कर चुके हैं। इकाई के इस भाग ने संक्षेप में स्पष्ट किया कि किस तरह आवश्यकताएं मनोविज्ञान और सामाजिक–सांस्कृतिक ढांचे से नियंत्रित होती हैं। अब हम एक बार फिर अपनी प्रगति जांचेंगेः

**बोध प्रश्न 3**

1. सामाजिक व्यवस्था में अलग–अलग व्यक्तित्व वाले लोग किस तरह एकीकृत होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2. निम्न वाक्यों को पूर्ण कीजिये–

अ). व्यावहारिक व्यवस्था के जरिये पार्सन्स ने ..... और इसके ..... ..... के बीच के अंतर को पाटने का प्रयास किया है।

ब). ..... का अर्थ विकल्पों की एक विस्तृत विविधताओं से चयन की प्रक्रिया से है।

स). सीखने का अर्थ सिर्फ सूचनाओं के एकत्रीकरण से नहीं है, बल्कि इसका तात्पर्य ..... को लागू करने से है।

## 2.9 सारांश

पार्सन्स कहते हैं कि व्यक्तित्व ढांचा किसी बच्चे के भीतर समाजीकरण प्रक्रिया के जरिये स्थापित होता है। समाजीकरण की यह प्रक्रिया सामाजिक संवादों से प्रभावित और नियंत्रित होती है। वहीं, वे वयस्क जो बच्चों को उन्मुखीकृत करते हैं, वे स्वयं भी उन निश्चित नियमों का पालन करते हैं जो उनके भीतर संस्थानीकृत हो चुके हैं। इस व्यवस्था में बच्चा बड़ों से अपेक्षाएं विकसित करता है जिन्हें भूमिका अपेक्षा कहा जाता है। मूल्यों का यह पैटर्न वयस्कों द्वारा संशोधित एवं संरक्षित किया जाता है, जिसमें आने वाली पीढ़ियों के अनुरूप बदलाव भी किये जाते हैं।

सामाजिक क्रिया के सिद्धांत में पार्सन्स व्यक्ति के व्यक्तित्व में मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक दृष्टिकोण को भी रेखांकित किया है। लेकिन इसके साथ ही उन्होंने व्यक्ति की क्रियाओं पर सामाजिक–सांस्कृतिक तत्वों के प्रभाव को भी स्पष्ट किया। पार्सन्स के अनुसार सामाजिक व्यवस्था का अनुक्रम व्यक्तित्व और सामाजिक प्रणालियों पर निर्भर करता है। यही वह सन्दर्भ है जो स्पष्ट करता है कि पार्सन्स ने क्यों व्यक्ति की प्रेरणा के नियंत्रण में समाजीकरण एवं सामाजिक नियंत्रण की भूमिका को इतना अधिक महत्व दिया है।

पार्सन्स ने बताया कि किसी सिद्धांत के तीन महत्वपूर्ण कार्य होने चाहिये। पहला– इसे एक ठोस परिकल्पना के जरिये अस्तित्वमान ज्ञान को व्यवस्थित करना चाहिये। दूसरा– इसे हमें अपने ज्ञान और अज्ञान की सीमाओं की पहचान करने में सक्षम बनाना चाहिये। तीसरा– यह प्रस्थान या विचलन के लिये एक बिंदु की उपलब्धता सुनिश्चित करता है। पार्सन्स ने क्रिया सिद्धांत के प्रतिपादन के दौरान स्वयं भी इन तीनों बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित रखा, ताकि यह स्पष्ट कर सकें कि वे कौन से तरीके हैं, जिनके जरिये व्यक्ति किसी क्रिया का चयन करता है। पार्सन्स ने क्रिया सिद्धांत की अवधारणा की स्थापना के लिये मनोविज्ञान, मानवविज्ञान, समाजशास्त्र और जीवविज्ञान विषयों के सैद्धांतिक प्रस्तावों की समीक्षा की। उन्होंने श्रेणीबद्धता के जरिये क्रिया सिद्धांत की बुनियादी इकाइयों के विश्लेषण में इन विषयों की सीमाओं की पहचान की। अंत में उन्होंने बताया कि क्रिया सिद्धांत परस्पर निर्भर हैं, लेकिन इसी दौरान वे विभिन्न क्रिया सिद्धांतों के बीच और भीतर सीमाओं को भी बनाये रखते हैं।

## 2.10 सन्दर्भ

Parsons, Talcott & Shills, Edward A. 1962. *Towards a General Theory of Action*, Cambridge, Harvard University Press.

## 2.11 बोध प्रश्न के उत्तर

**बोध प्रश्न 1:**

1. अ). परिस्थितियां

   ब). मनोवैज्ञानिक और सामाजिक–सांस्कृतिक श्रेणियां

2. पार्सन्स के क्रिया सिद्धांत का सन्दर्भों का ढांचा सामाजिक विज्ञान के सैद्धांतिक एवं शोध अंतर्दृष्टि में योगदान के प्रयास के तौर पर देखा जा सकता है। पार्सन्स के अनुसार व्यक्ति (जिसे वह कर्ता कहते हैं) तार्किक होता है। उसकी क्रियाएं निश्चित लक्ष्य की ओर उन्मुख होती हैं, लेकिन इस प्रक्रिया के दौरान वह सामाजिक नियमों और व्यक्तिगत मूल्यों से प्रभावित रहता है। पार्सन्स इन प्रभावों को क्रियाओं के संदर्भ में ढांचे के तौर पर परिभाषित करते हैं। टाल्कॉट पार्सन्स के अनुसार व्यक्ति या कर्ता का चयन संज्ञानात्मक, मनोभावों और मूल्यांकन विधियों से प्रभावित होता है। संज्ञानात्मक चयन का तात्पर्य यह जानने से है कि किसी विशेष क्रिया को संपन्न करने से लक्ष्य प्राप्ति में कितनी संतुष्टि होगी। मनोभाव का अर्थ उन्मुखीकरण के उस तरीके से है, जिसमें वस्तुओं के प्रति व्यक्ति सकारात्मक या नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है। मानसिक संबद्धता (कैथेक्सिस) का अर्थ संतोषजनक वस्तुओं–प्रक्रियाओं से व्यक्ति के मानसिक या भावनात्मक जुड़ाव और अप्रिय या हानिकारक वस्तुओं को नकारने से है। पार्सन्स के अनुसार जब कोई कर्ता अपनी क्रिया को उन साधनों से जोड़ता है, जो उसके लक्ष्यों और रुचियों की पूर्ति करती हों तो ऐसी स्थिति में क्रिया इस दिशा में उन्मुखित होती है। यहां पार्सन्स उन प्रक्रियाओं पर जोर देते हैं जो कर्ता द्वारा किसी निश्चित भावना के विश्लेषण को प्रभावित करते हैं और जिनके कारण कर्ता एक निश्चित तरीके से ही क्रिया संपन्न करता है, किसी अन्य तरीके से नहीं। पार्सन्स कहते हैं कि कर्ता का उन्मुखीकरण किसी विशेष क्षण में तात्कालिक परिस्थितियों, मूल्यांकन से प्रभावित होता है। वह बताते हैं कि परिस्थितियां कर्ता के उन्मुखीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कोई परिस्थिति किसी क्रिया को सीमित कर सकती है या विकल्प उपलब्ध करा सकती है। पार्सन्स ने परिस्थितियों को दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया है– गैर सामाजिक और सामाजिक। कर्ता उन्मुखीकरण को प्रभावित करने वाली शिक्षा, व्यवसाय जैसी भौतिक कारकों को गैर सामाजिक श्रेणी में रखा गया है। वहीं, कर्ता के व्यक्तित्व और अन्य कारकों को सामाजिक की श्रेणी में रखा गया है।

**बोध प्रश्न 2:**

1. पार्सन्स ने तर्क दिया कि हर कर्ता के अपने लक्ष्य और तरीके होते हैं, लेकिन जब ये लक्ष्य और तरीके नियमों के जरिये अनुकूलित किये जाते हैं, तब इन्हें स्वाभाविक आवश्यकता कहा जाता है। वह उदाहरण देकर बताते हैं कि

सामाजिक व्यवस्था में दो या दो से अधिक कर्ता अपनी–अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं। वह आगे दो कर्ताओं (जिन्हें ईगो और अल्टर कहा गया है) का उदाहरण देते हैं। उनके अनुसार ईगो से की गयी अपेक्षा और उसके द्वारा अपनी भूमिका के निर्वहन में किये जाने वाले प्रयास अल्टर के व्यवहार को प्रभावित करते हैं। किन्तु इसी दौरान ईगो अल्टर की अपेक्षित भूमिका को नकारने का विकल्प चुन सकता है। वह या तो विद्रोही बन सकता है या परिस्थिति से स्वयं को बाहर करने का निर्णय ले सकता है। इस सन्दर्भ में पार्सन्स तर्क देते हैं कि व्यक्तित्व स्वायत्त है, क्योंकि यह संवाद करता है, संशोधन करता है और अपेक्षित भूमिकाओं के अनुरूप ढलने का प्रयास करता है।

2. पार्सन्स के अनुसार समाजीकरण कर्ता के व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पार्सन्स एक उदाहरण से इसे समझाते हैं– कोई बच्चा अपने वयस्कों की प्रतिक्रियाओं के तरीकों से सीखता है, ये प्रतिक्रियाएं आगे चलकर बच्चे की अपनी रुचियों या चयन के तरीकों को प्रभावित करती हैं। बच्चा प्रतिक्रियाओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करता है और इस तरह उपयुक्त दृष्टिकोण सीखता है। यहां बच्चा अपने भीतर जैविक आवश्यकताओं की संतुष्टि से अलग सामाजिक संबद्धता भी विकसित करता है। बच्चा अपने बड़ों की इच्छाओं की पूर्ति की ओर उन्मुख होता है, इसे समाजीकरण कहा जाता है। समाजीकरण लोगों की क्रियाओं के निर्धारण, निर्देशन और नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

3. पार्सन्स ने सांस्कृतिक व्यवस्था को तीन घटकों में बांटकर देखा है। पहला– विचार और विश्वास। दूसरा– भावपूर्ण प्रतीक जैसे कला और शैलियां। तीसरा मूल्योन्मुखी व्यवस्था।

**बोध प्रश्न 3:**

1. पार्सन्स बताते हैं कि अलग–अलग व्यक्तियों के अलग–अलग मूल्योन्मुख हो सकते हैं, जबकि सामाजिक व्यवस्था का एक साझा सांस्कृतिक लक्ष्य हो सकता है। यह साझा संस्कृति एकीकरण और आवंटन की समस्या का समाधान तलाशती है। पार्सन्स के अनुसार अस्तित्व के लिये सामाजिक व्यवस्था को कुछ निश्चित प्रक्रियाओं को संपन्न करना होता है। इस तरह भूमिकाओं का एक ऐसा सेट बन जाता है जो एक–दूसरे के साथ समन्वय और संपूरक के तौर पर काम करते हैं। ये भूमिकाएं अपरिहार्य हैं, लेकिन चूंकि व्यक्ति का जीवनकाल सीमित है, यहां व्यवस्था को ऐसे व्यक्तियों की जरूरत होती है जो प्रतिस्थापित होते रहें, ताकि भूमिकाओं का सातत्य और व्यवस्था की निरंतरता बनी रहे। ऐसे में पुष्टि या विचलन के लिये भूमिकाओं और प्रतिबंधों को परिभाषित करने की आवश्यकता महसूस होती है। लेकिन ऐसा नहीं है कि कोई भी व्यक्ति कुछ भी भूमिका निर्वाह कर सके, बल्कि व्यक्तियों का चयन मूल्यांकन के मानकों के अनुरूप किया जाता है। इस तरह इस व्यवस्था के सामाजिक ढांचे का स्थायित्व मूल्यों के संस्थानीकरण पर निर्भर करता है। ये मूल्य चयन को वैधानिक आधार देने के साथ प्रतिबंधों को गति

देते हैं। यह व्यवस्था परस्पर संवाद करने वालों को भूमिकाओं के आवंटन के जरिये एकीकरण के लक्ष्य की पूर्ति करती हैं। इसके अलावा व्यवस्था इन एकीकृत भूमिकाओं को पर्याप्त शक्ति और प्रतिष्ठा भी प्रदान करती है। यह भूमिकाएं निभाने वाले व्यक्तियों को समाज की आम मूल्य सहमति की पुष्टि करनी चाहिये। इस तरह ये आवंटित और एकीकृत भूमिकाएं समाज के लिये एकीकरण कार्यों को पूर्ण करती हैं।

2. अ). व्यक्तित्व और इसका जैविक आधार

   ब). मूल्यांकन

   स). उन्मुखीकरण के नये तरीकों को

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY